International Journal of Social Science and Humanities
www.humanitiesjournals.com
Online ISSN: 2664-8628; Print ISSN: 2664-861X
Received: 14-11-2020; Accepted: 14-12-2020; Published: 29-12-2020
Volume 2; Issue 2; Dec 2020, Page No. 80-81

कौटिल्य के आर्थिक विचारः एक अध्ययन

डॉ. पुष्पा देवांगन[1], डॉ. बलभद्र प्रसाद देवांगन[2]
[1] प्राचार्य एवं विभागाध्यक्ष, अर्थशास्त्र विभाग, के. पी. महाविद्यालय, बंधापाली, सारंगढ, रायगढ़, छत्तीसगढ़, भारत
[2] प्राचार्य एवं विभागाध्यक्ष, अर्थशास्त्र विभाग, अशोका महाविद्यालय, उम्मेदपुर, सारंगढ, छत्तीसगढ़, भारत

सारांश
कौटिल्य के आर्थिक विचार आज भी प्रासंगिक है। उन्होने अर्थशास्त्र के सभी विभागों पर विचार किया। इनके अन्तर्गत कौटिल्य ने अर्थव्यवस्था की मुख्य समस्याओं पर भी विचार किया कि किन वस्तुओं का उत्पादन कैसे किया जाये, विनिमय, वितरण तथा आर्थिक विकास कैसे हा, आय–व्यय में किस प्रकार सामंजस्य स्थापित किया जाये। कौटिल्य अर्थव्यवस्था की नींव है। कौटिल्य कृषि को प्रथम तथा उद्योग को द्वितीय स्थान प्रदान किया था जो कि भारतीय अर्थव्यवस्था की नींव है। उद्योग कृषि पर ही आधारित है। उन्होने कृषि एवं उद्योग के विकास पर पर्याप्त बल दिया।

मुख्य शब्द: कौटिल्य के आर्थिक विचार, अर्थव्यवस्था की मुख्य समस्या, भारतीय अर्थव्यवस्था

ऐसा विश्वास किया जाता है कि आर्थिक विचारों के मामले में अत्यन्त उज्ज्वल रहा है। ईसा से चौथी शताब्दी पूर्व भी भारत में आर्थिक विचार अत्यंत व्यापक थे। यद्यपि उस समय अर्थशास्त्र का अध्ययन एक पृथक विषय के रूप में नही किया जाता था। प्राचीन आर्थिक विचारों पर राजनीति, धर्म, दर्शन, साहित्य का भी प्रभाव था। प्रारंभ से ही हमारे विचारों तथा कार्यो पर नैतिकता का प्रभाव रहा है और भोतिक मनोभावना का आभाव रहा है। देश की भौतिक एवं राजनीतिक परिस्थितियों के बदलने के सांथ–सांथ आर्थिक विचारों में परिवर्तन होते रहे है। वैदिक सिद्ध पुरूषों, उपनिषदों, पंडितों, मनु के रानीतिक दर्शन, शुक्रनीति धर्मशास्त्र, महाकाव्यों कौटिल्य के अर्थशास्त्र आदि के द्वारा प्राचीन भारतीय आर्थिक विचारों को प्रप्त किया जा सकता है।

प्राचीन भरतीय आर्थिक विचारकों में कौटिल्य का महत्वपूर्ण स्थान है। उन्हें चाणक्य के नाम से भी जाना जाता है। यद्यपी कौटिल्य केवल आर्थीक विचारक नही थे किन्तु उन्होने राजनीति तथा अर्थशास्त्र में प्रर्याप्त समन्वय स्थापित किया। वे एक निपुर्ण कुटनतिज्ञ थे जिसका पर्याप्त लाभ सम्राट चन्द्रगुप्त मौर्य को राज्य शासन चलाने में प्राप्त हुआ था। कौटिल्य के पुस्तक अर्थशास्त्र में प्राचीन आर्थिक संस्थाओं से संबंधित उनके विचार प्राप्त होते है। अर्थव्यवस्था के सभी क्षेत्रों के विषय में कौटिल्य ने अपने विचार व्यक्त किये हैं। उनके अनुसार– अर्थशास्त्र उन सभी निबंधों का संग्रह है जो प्रारंभिक सामन्तों ने पृथ्वी को प्राप्त करने तथा सुरक्षित रखने के विषय पर लिखे थे। कौटिल्य के अर्थशास्त्र में प्रचीन परम्पराओं के व्याख्यान मिलते हैं तथा आर्थिक प्रशासन पर सामान्य निर्देश दिये गये है। कौटिल्य के प्रमुख आर्थिक विचार निम्नानुसार है–

कृषि : कौटिल्य ने अर्थव्यवस्था में कृषि को प्रथम स्थान दिया था। उनके अनुसार राज्य को एक या दो कोस की दूरी पर गांव बसाना चाहिये जिनमें कृषक अधिक संख्या में हो। भूमि कर तथा अन्य कर कृषक पर लगाकर राज्य द्वारा आय प्राप्त की जा सकती है। कर चुकाने वाले कृषकों को राज्य द्वारा सहायता प्रदान की जानी चाहिए। उन्हे अनाज पशु तथा नगद देना चाहिए। कौटिल्य ने ग्राम की सीमा के भीतर भ्रमणार्थियों तक का प्रवेश वर्जित बताया था। ताकि कृषक के कार्य में बाधा उपस्थित न हो। सिंचाई की व्यवस्था करना राजा का कर्तव्य माना जाता था। सिंचाई के लिए कूप, तालाब, बांध तथा झील का निर्माण करवाया जाता था। कृषि पूर्णतः पशुओं पर निर्भर थी। जंगलों की व्यवस्था करना राज्य का कर्तव्य था। कौटिल्य के अर्थशास्त्र से दो प्रकार की भूमि के बारे में जानकारी मिलती है। प्रथम–राजकीय भूमि, द्वितीय– व्यक्तिगत भूमि पर कौटिल्य ने राजा के स्वामित्व को स्वीकार किया है। राजकीय भूमि पर राजा के अधिकारी कृषि कार्य करवाते थे। कृषक को भूमि राज्य की ओर से दी जाती थी। यदि कृषक द्वारा भूमि का दूरूपयोग हो रहा हो तो उसे राज्य के अधीन कर लिया जाता था।

उद्योग एवं व्यापार : कौटिल्य के अर्थशास्त्र में अनेक ऐसे निर्देश प्राप्त होते है जिनमें कि शिल्पियों एवं व्यापारियों के संगठनों की सत्ता सुचित होती है। शिल्पियों के संदर्भ में तीन अमान्य नियत करने का उल्लेख है जिनका कार्य था– आर्थिक विपत्तियों का प्रतिकार करना, शिल्पियों पर नियंत्रण रखना, अमानत को सुरक्षित रखना तथा स्वयं शिल्प का संचालन करना। काष्ठ शिल्प के अंतर्गत लकडी का प्रयोग विभिन्न वस्तुएँ बनाने में किया जाता था। कौटिल्य ने श्रेणि निकायों के सांथ ही व्यापारियों के संगठनों का भी उल्लेख किया है।

कौटिल्य ने तत्कालीन व्यवसायों का विवेचन किया है। व्यापार तथा उद्योगों पर राज्य का पूर्ण नियंत्रण रहता था। नीजी क्षेत्र की अपेक्षा सार्वजनिक क्षेत्र अधिक उन्नत अवस्थ में था। आंतरिक एवं बाह्य दोनों प्रकार के व्यापार उन्नत अवस्था में थें। दोने ही प्रकार के व्यापार जल तथा थल मार्गो द्वारा किये जाते थे। व्यापार के विकास के लिए यातायात की सुविधा का भी ध्यान रखा जाता था। खानों, नमक तथा शराब पर राज्य का एकाधिकार था। खान उद्योग के अंतर्गत सोना, चांदी, तांबा तथा लोहा अधिक मात्रा में निकाला जाता था तथा उनका प्रयोग उपयोग आभूषण, औजार, युद्ध के हथियार बनाने में किया जाता था। धातु उद्योग, वस्त्र उद्योग, चर्म उद्योग विकसीत अवस्था में थे। कौटिल्य ने बाह्य व्यापार पर भी ध्यान दिया। पण्याध्यक्ष द्वारा यह निश्चित किया जाता था कि किन वस्तुओं का किन देशों में निर्यात किया जाये तथा विभिन्न करों एवं व्ययों को निकालने के पश्चात् कितना लाभ व हानि प्राप्त होती है। निर्यात प्रोत्साहन के लिए व्यापरियों को राज्य द्वारा विभिन्न सुविधाएँ दी जाती थी। राज्य के लिए उपयोगी वस्तुओं का आयात किया जात था। राज्य के लिए हानिकारक वस्तुओं का आयात प्रतिबंधित था। भारत के

द्वारा निर्यात की जाने वाली प्रमुख वस्तुएँ थी– वस्त्र, हीरे, जवाहरात, मसाले, रंग, हांथी दांत की वस्तुएँ एवं सुगंधित वस्तुएँ। आयातित वस्तुओं में सोना, चांदी, तांबा, शीशा आदि मुख्य थे।

व्यापार में मुद्रा विनिमय का मुख्य आधार थी। कौटिल्य ने कार्षापण, माषक तथा काकणी जैसी मुद्राओं का उल्लेख किया है। अर्थशास्त्र में रजतपण तथा उसके विभाग ही मानक मुद्राएं मानी गयी है।

राज्य की व्यापारिक नीति का मुख्य उद्देश्य यह था कि उसकी आय में वृद्धि हो तथा उपभोगक्ताओं को कम मूल्य पर वस्तुएँ उपलब्ध हो व्यापार प्रारंभ करने के लिए व्यापाररियों को राज्य से अनुमति प्राप्त करना आवश्यक था।

कौटिल्य के अनुसार व्यापरियों के संगठन श्रेणियों पर राज्य का कठोर नियंत्रण होना चाहिए। राजा को श्रेणियों के हितों का ध्यान रखना चाहिये ताकि विपत्ति के समय इनसें सहायता प्राप्त की जा सकें। राज्य की ओर से लेखाध्यक्ष को निर्धारित प्रपत्रों में श्रेणियों के इतिहास, व्यवसाय लेन–देन का सम्पूर्ण विवरण अद्यतन करना पड़ता था। इन श्रेणियों के सदस्य कभी–कभी साझेदारी में भी कार्य करते थे। कौटिलय के अनुसार यह साझेदारी आर्थिक लाभ के लिए की जाती थी। इसके लिए साधारण कोष में प्रत्येक सदस्य को आपना अंश देना होता था। व्यक्ति की कार्यकुशलता तथा शिल्प ज्ञान साझेदारी का आधार था न कि उसके द्वारा दिया गया मूलधन।

उद्योग एवं व्यापार को सक्रिय प्रोत्साहन देना राज्य का धर्म एवं राजा का कर्तव्य माना जाता था। उद्योग एवं व्यापार नियंत्रण करने के कंटकशोधक न्यायालय की स्थापना की जाती थी जिसके द्वारा उपभोक्ताओं के हितों की सुरक्षा की जाती थी।

आय तथा व्यय : कौटिल्य के अर्थशस्त्र में कोष को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। क्योकि राज्य के सब कार्यो को इस पर भी निर्भर माना गया है। कोष में आय प्राप्त करने का सबसे महत्वपूर्ण साधन कर को माना गया है। जनता को राजा से सुरक्षा प्राप्त होती है तथा बदले में जनता द्वारा कर दिया जाता है। राजा को समय तथा स्थान की सुविधाओं को ध्यान में रखकर जनता पर कर लगाना चाहिए। यदि कर जनता की सुविधा को को ध्यान में न रखकर लगाया जाये तो इसमें विद्रोह भी भावना उत्पन्न होगी तथा राजा का अंत हो जायेगा।

कौटिल्य ने आय को दो भागों में विभाजित किया– आय शरीर तथा मुख। इनके अंतर्गत विभिन्न स्त्रोंतों से प्राप्त आय को शामिल किया जाता था। राज्य को चुंगी कर, दण्ड, विभिन्न वस्तुओं पर कर, भूमि कर, नगर कर, कृषि कर, वनोपज से आय, वणिक पथ कर आदि द्वारा प्राप्त होती थी। इनके अतिरिक्त न्यायलयों से शुल्क प्राप्त होता था। युद्ध अकाल आदि के समय नये कर भी लगाये जाते थे। संकट के समय धनी वर्ग पर अधिक कर लगाया जाता था।

राज्य के आय–व्यय का लेखा जोखा पहले ही तैयार कर लिया जाता था। राज्य द्वारा विभिन्न मदों पर व्यय जाता था जिनमें प्रमुख मदें इस प्रकार थी–राज परिवार, धार्मिक कृत्या, सेना, रक्षा, वेतन, शिक्षा, वृत्ति, दान, यातायात, सिंचाई, भवन–निर्माण तथा अन्य लोकोपयोगी कार्य। कौटिल्य ने राज्य के विभागों के अधिकारियों को अध्यक्ष कहा है। राजस्व विभाग के संचालन समाहर्ता करता था तथा उसके अधिन कई अध्यक्ष कार्यरत होते थे।

प्रासंगिकता : कौटिल्य के आर्थिक विचार आज भी प्रासंगिक है। उन्होने अर्थशास्त्र के सभी विभागों पर विचार कियां। इनके अंतर्गत कौटिल्य ने अर्थव्यवस्था की मुख्य समस्याओं पर भी विचार किया कि किन वस्तुओं का उत्पादन कैसे किया जाये, विनिमय, वितरण तथा आर्थिक विकास कैसे हो, आय–व्यय में किस प्रकार सामंजस्य स्थापित किया जाये। कौटिल्य अर्थव्यवस्था की नीव है। उन्होने कृषि को प्रथम तथा उद्योग को द्वितीय स्थान प्रदान किया था जो कि भारतीय अर्थव्यवस्था की नींव है। उद्योग कृषि पर ही आधिारित है। उन्होने कृषि एवं उद्योग के विकास पर पर्याप्त बल दिया।

निष्कर्ष

कौटिल्य के विचारों के अध्ययन से ज्ञात होता है कि प्राचीनकाल में भी कल्याणकारी राज्य की स्थापना पर बल दिया जाता था। राज्य द्वारा उपभोक्ताओं तथा उत्पादकों दोनो के हितों की रक्षा की जाती थी। इसके लिए अर्थव्यवस्था पर राजकीय नियंत्रण को आवश्यक माना गया था। उनके अनुसार राज्य को करों से आया प्राप्त करनी चाहिए। कर प्रणाली सुविधजनक, न्यायपूर्ण तथा करदान क्षमता के अनुरूप होना चाहिए। सरकार को विभिन्न साधनों से प्राप्त आय को सार्वजनिक हित के कार्यो पर व्यय करना चाहिए। ये विचार आधुनिक कर–प्रणाली के अनुरूप है। आंतरिक तथा बाह्य व्यापार के विकास के लिए सरकार द्वारा सुविधाएँ प्रदान की जानी चाहिए। अर्थव्यवस्था के विकास के लिए निर्यातों को प्रोत्साहन दिया जाना चाहिए। समाज के लिए हानिकारक वस्तुओं के आयात को प्रतिबंधित किया जाये। कुछ वस्तुओं के उत्पादन पर राज्य का एकाधिकार होना चाहिए। व्यापार के विकास के लिए यातायात सुविधाएँ उपलब्ध करवाई जानी चाहिए। व्यापारियों द्वारा अनुचित लाभ न उठाया जा सके इसके लिए राज्य द्वारा कीमत स्तर को नियंत्रित किया जाना चाहिए। इसमें उपभोक्ताओं को शोषण से बचाया जा सकता है। तात्पर्य यह है कि कौटिल्य ने अर्थव्यवस्था के हर महत्वपूर्ण पहलू पर अपने विचार व्यक्त किये है, जिनकी प्रसंगिकता आज भी है।

संदर्भ सूची

1. प्राचीन भारतीय समाजिक एवं आर्थिक संस्थाएँ– डॉ. कैलाशचन्द जैन
2. भारत की समाजिक एवं आर्थिक संरचना और संस्कृति के मूल तत्व (आदिकाल से 1950 ई. तक)
3. चाणक्य नीति– अनुवादक– डॉ. रामचन्द्र वर्मा शास्त्री
4. आचार्य चाणक्य– डॉ. शान्तिस्वरूप त्रिपाठी
5. Aspects of Anient Indian Economic Thoughts Rao Bahadur, K.V. Rangaswami Aiyangar